नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
अथर्ववेद संहिता 16 काण्ड से 19 काण्ड पर्यन्त । माण्डूक्योपनिषद् (मूलमात्र) । गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 4, 5, 6 प्रपाठक					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम	अथर्ववेद संहिता 16 काण्ड 1, 2 अनुवाक	103	10	परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये।
2	द्वितीय	अथर्ववेद संहिता 17 काण्ड 1 अनुवाक मुण्डकोपनिषद् (मूलमात्रम्)	30	10	
3	तृतीय	अथर्ववेद संहिता 18 काण्ड 1, 2 अनुवाक	121	10	
4	चतुर्थ	अथर्ववेद संहिता 18 काण्ड 3, 4 अनुवाक	162	10	
5	पञ्चम	गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 4 प्रपाठक (1-19 कंडिका)		10	
6	षष्ठ	अथर्ववेद संहिता 19 काण्ड 1, 2 अनुवाक	131	10	
7	सप्तम	अथर्ववेद संहिता 19 काण्ड 3, 4 अनुवाक	133	0	
8	अष्टम	अथर्ववेद संहिता 19 काण्ड 5, अनुवाक गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 5 प्रपाठक (1-15 कंडिका)	75	10	
9	नवम	अथर्ववेद संहिता 19 काण्ड 6 अनुवाक गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 6 प्रपाठक (1-16 कंडिका)	61	10	
10	दशम	अथर्ववेद संहिता 19 काण्ड 7 अनुवाक माण्डूक्योपनिषद् (मूलमात्रम्)	53	10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			869 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)					
अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड सम्पूर्ण । अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड पदपाठ 1-6 अनुवाक । कुन्तापसूक्त । पद-क्रम-जटा-घन लक्षण । भूमिसूक्तभाष्य					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 1 अनुवाक	64	10	परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये।
2	द्वितीय	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 2 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 1 अनुवाक	34 + 29	10	
3	तृतीय	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 3 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 2 अनुवाक	99 + 25	10	
4	चतुर्थ	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 4 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 3 अनुवाक	56 + 20	10	
5	पञ्चम	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 5 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 4 अनुवाक	157 + 20	10	
6	षष्ठ	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 6 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 5 अनुवाक	67 + 28	10	
7	सप्तम	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 7 अनुवाक अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड (पदपाठ) 6 अनुवाक	83 + 31	0	
8	अष्टम	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 8 अनुवाक	80	10	
9	नवम	अथर्ववेद संहिता 20 काण्ड 9 अनुवाक, कुन्ताप सूक्त सहित	318	10	
10	दशम	पद-क्रम-जटा-घन लक्षण + भूमिसूक्त भाष्य		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			958 मन्त्र 153 पदपाठ	100 अंक	